BSKC-132

बी.ए. कार्यक्रम

(बी.ए.जी.)
संस्कृत

सत्रीय कार्य (द्वितीय छमाही)

जनवरी 2021 एवं जुलाई 2022 सत्रों के लिए

BSKC – 132 संस्कृत गद्य–साहित्य

मानविकी विद्यापीठ
इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
मैदान गढ़ी, नई दिल्ली – 110068

बी.ए. (कार्यक्रम) संस्कृत–कोर पाठ्यक्रम

सत्रीय कार्य (2021–22)

पाठ्यक्रम कोड : **BAG/BSKC-132/2021 - 22**

प्रिय छात्र/छात्राओं,

यह सत्रीय कार्य शिक्षक जाँच सत्रीय कार्य (**TMA**) है। सत्रीय कार्य के लिए 100 अंक निर्धारित किए गए हैं। सत्रीय कार्य में पूरे पाठ्यक्रम से प्रश्न पूछे जाएँगे।

उद्देश्य : शिक्षक जाँच सत्रीय कार्य का उद्देश्य यह जाँचना है कि आपने पाठ्य सामग्री को कितना समझा है और आप उसे अपने शब्दों में कैसे प्रस्तुत कर सकते हैं। यहाँ पाठ्य सामग्री की पुनर्प्रस्तुति से तात्पर्य नहीं है वरन् अध्ययन के दौरान जो कुछ सीखा और समझा है उसे आप आलोचनात्मक ढंग से प्रस्तुत कर सकें।

निर्देश :– सत्रीय कार्य आरम्भ करने से पूर्व निम्नलिखित बातों को ध्यान से पढ़िए :

1) अपनी उत्तर पुस्तिकाओं के पहले पृष्ठ के दायें सिरे पर अनुक्रमांक, नाम, पूरा पता और दिनाँक लिखिए।

2) बाईं ओर पाठ्यक्रम का शीर्षक, सत्रीय कार्य संख्या और अपने अध्ययन केन्द्र का उल्लेख करें जैसा आगे दिखाया गया है ।

अनुक्रमांक : ....

नाम : ....

पता : ....

पाठ्यक्रम का नाम/कोड : ....

सत्रीय कार्य कोड : ....

अध्ययन केन्द्र का नाम/कोड : ....

दिनाँक : ....

सत्रीय कार्य जमा कराने की तिथियाँ :

जनवरी 2021 सत्र के लिए : विश्वविद्यालय नियमानुसार

जुलाई 2022 सत्र के लिए : विश्वविद्यालय नियमानुसार

सत्रीय कार्य के लिए आवश्यक निर्देश

1. **अध्ययन :** सबसे पहले सत्रीय कार्य को ध्यान से पढ़िए। फिर इससे संबंधित इकाइयों का सावधानीपूर्वक अध्ययन कीजिए। अंत में प्रत्येक प्रश्न के संबंध में कुछ खास बातें नोट कर लीजिए और उन्हें तार्किक ढंग से व्यवस्थित कीजिए।

2. **अभ्यास :** उत्तर का प्रारूप तैयार करने से पूर्व नोट की गई बातों पर विचार कीजिए। अनावश्यक बातों को हटा दीजिए और प्रत्येक बिंदु पर विस्तार से विचार कीजिए। निबंधात्मक या टिप्पणीपरक प्रश्नों में आरंभ और उपसंहार पर विशेष ध्यान दीजिए। उत्तर के आरंभिक अंश में प्रश्न की संक्षिप्त व्याख्या और अपने उत्तर की दिशा का संकेत अवश्य दे देना चाहिए। मध्य भाग में आप उत्तर का मुख्य भाग आवश्यक विस्तार के साथ क्रमबद्धता और तार्किक ढंग से प्रस्तुत करें। उपसंहार में उत्तर का सार देना चाहिए।

यह सुनिश्चित कर लीजिए कि :

(क) आपका उत्तर तार्किक और सुसंगत हो,

(ख) उत्तर सही ढंग से लिखा गया हो तथा आपकी अभिव्यक्ति शैली और प्रस्तुति के पूर्णतया अनुकूल हो,

(ग) आपके लेखन में भाषागत त्रुटियाँ न हों, विशेष रूप से मात्रा और व्याकरण संबंधी गलतियों से बचें।

3. **प्रस्तुति** : जब आप अपने उत्तर से पूर्णतया संतुष्ट हो जाएँ तो उसे साफ और सुंदर अक्षरों में उत्तर पुस्तिका में लिख लीजिए तथा जिन बातों पर आप जोर देना चाहते हैं, उन्हें रेखांकित कर दीजिए।

शुभकामनाओं के साथ।

नोट : याद रखें कि परीक्षा में बैठने से पूर्व सत्रीय कार्य जमा कराना अनिवार्य है अन्यथा आपको परीक्षा में बैठने की अनुमति नहीं दी जाएगी।

सत्रीय कार्य : BSKC- 132 संस्कृत गद्य–साहित्य

पाठ्यक्रम कोड – **BSKC-132**
पाठ्यक्रम शीर्षक – संस्कृत गद्य–साहित्य
सत्रीय कार्य – **BSKC – 132/TMA/2021-2022**

पूर्णांक – 100
नोट – सभी प्रश्न अनिवार्य हैं : –

(क) व्याख्या आधारित प्रश्न :–

1. अधोलिखित गद्यांशों की ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए :– **20X2=40**

(क) यथायथा चेयं चपला दीप्यते तथातथा दीपशिखेव कज्जलमलिनमेव कर्म केवलमुद्वमति। तथा हि। इयं संवर्धनवारिधारातृष्णाविषवल्लीनाम्, व्याधगीतिरिन्द्रियमृगाणाम्, परामर्शधूमलेखा सच्चरितचित्राणाम्, विभ्रमशय्या मोहदीर्घनिद्राणाम्, निवास–जीर्ण–वलभी धन–मद–पिशाचिकानाम्, तिमिरोद्‌गतिः शास्त्रदृष्टीनाम्, पुरःपताका सर्वाविनयानाम्, उत्पत्तिनिम्नगा क्रोधावेगग्राहाणाम्, आपानभूमिर्विषयमधूनाम्, संगीतशाला भ्रूविकारनाट्यानाम्, आवासदरी दोषाशीविषाणाम्, उत्सारणवेत्रलता सत्पुरुषव्यवहाराणाम्, अकालप्रावृड् गुणकलहंसकानाम्, विसर्पणभूमिर्लोकापवादविस्फोटकानाम्,प्रस्तावना कपटनाटकस्य, कदलिका कामकरिणः, वध्यशाला साधुभावस्य, राहुजिह्वा धर्मेन्दुमण्डलस्य।

अथवा

आज्ञामपि वरप्रदानं मन्यन्ते। स्पर्शमपि पावनमाकलयन्ति। मिथ्यामाहात्म्यगर्वनिर्भराश्च न प्रणमन्ति देवताभ्यः, न पूजयन्ति द्विजातीन्, न मानयन्ति मान्यान् नार्चयन्त्यर्चनीयान् नाभिवादयन्त्यभिवादनार्हान्, नाभ्युत्तिष्ठन्ति गुरुन् अनर्थकायासान्तरितोपभोगसुखमित्युपहसन्ति विद्वज्जनम् जरावैक्लव्यप्रलपितमिति पश्यन्ति वृद्धोपदेशम्,आत्मप्रज्ञापरिभव इत्यसूयन्ति सचिवोपदेशाय, कुप्यन्ति हितवादिने। सर्वथा मिभिनन्दन्ति, तमालपन्ति, तं पार्श्वे कुर्वन्ति, तं संवर्धयन्ति, तेन सह सुखमवतिष्ठन्ते, तस्मै ददति, तं मित्रतामुपजनयन्ति, तस्य वचनं श्रृण्वन्ति, तत्र वर्षन्ति, तं बहु मन्यन्ते, तमाप्ततामापादयन्ति, योऽहर्निशमनवरतमुपरचिताञ्जलिरधिदैवतमिव विगतान्यकर्त्तव्यः स्तौति, यो वा माहात्म्यगुद्‌भावयति।

(ख) ‘‘अलं भो अलम् ! मयैव पूर्वमवचितानि कुसुमानि, त्वं तु चिरं रात्रावजागरीरिति क्षिप्रं नोत्थापितः, गुरुचरणा अत्र तडागतटे सन्ध्यामुपासते, संस्थापिता मया निखिला सामग्री तेषां समीपे। यां च सप्तवर्षकल्पाम् यावनत्रासेन निःशब्दं रुदतीम्, परमसुन्दरीम्, कलित–मानवदेहामिव सरस्वती सान्त्वयन् मरन्दमधुरा अपः पाययन्, कन्दखण्डानि भोजयन्, त्वं त्रियामाया यायत्रयमनैषीः सेमयधुना स्वपिति, उद्‌बुद्धय च पुनस्तथैव रोदिष्यति, तत्परिमार्गणीयान्येतस्याः, पितरौ गृहं च –’’

इति संश्रुत्य उष्णं निःश्वस्य यावत् सोऽपि किञ्चिद् वक्तुमियेष तावद्कस्मात् पर्वतशिखरे निपपात उभयोर्दृष्टिः।

अथवा

अथ स मुनिः – ‘‘भगवन् ! धैर्येण, प्रसादेन, प्रतापेन, तेजसा, वीर्येण, विक्रमेण, शान्त्या, श्रिया, सौख्येन, धर्मेण विद्यया च सममेव परलोकं सनाथितवति तत्र भवति वीरविक्रमादित्ये शनैःशनैः पारस्परिकविरोधविशिथिलीकृतस्नेह– बन्धनेषु राजसु, भामिनी–भ्रू

भङ्ग–भूरिभाव प्रभाव–पराभूत–वैभवेषु भटेषु, स्वार्थ चिन्ता–सन्तान वितानैकतान्नेण्मात्यवर्गेषु, प्रशंसामात्रप्रियेषु प्रभुषु, ''इन्द्रस्त्वं वरुणस्त्वं कुबेरस्त्वम्'' इतिवर्णनामात्रसक्तेषु बुद्धजनेषु कश्चन् गजिनीस्थाननिवासी महामदो यवजि ससेन्: प्राविशद् भारतवर्षे। स च प्रजानः विलुण्ठ्य, मन्दिराणि निपात्य, प्रतिमा–विभिद्य परश्शतान् जनांश्च दासीकृत्य, शतश उष्ट्रेषु रत्नान्यारोप्य स्वदेशमनैषीत्। एवं स ज्ञातास्वादः पौनः पुन्येन द्वाद्वशवारमागत्य भारतमलुलुण्ठत्। तस्मिन्नेव च स्वसंरम्भे एकदा गुर्जरदेश चूडायित सोमनाथतीर्थमपि धूलीचकार।

(ख) लघु उत्तरीय प्रश्न :– 6X5=30

2. संस्कृत गद्यकाव्य का स्वरूप स्पष्ट कीजिए।

3. अम्बिकादत्त व्यास के जीवन–वृत्त एवं कर्तृत्व पर प्रकाश डालिए।

4. हितोपदेश पर टिप्पणी लिखिए।

5. शुकनासोपदेश में वर्णित तत्कालीन स्थिति का वर्णन कीजिए।

6. पुरूष परीक्षा के प्रतिपाद्य विषय पर टिप्पणी लिखिए।

(ग) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न : 15X2=30

7. बाणभट्ट के व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व पर प्रकाश डालिए।

8. निम्नलिखित में से किन्हीं तीन विषयों पर लेख लिखिए :–

(क) सिंहासनद्वात्रिंशिका

(ख) पण्डिता क्षमाराव

(ग) कादम्बरी का चरित्र चित्रण

(घ) राजाओं की दशा (शुकनासोपदेश)